Logic

B.A-(Hon's) Part - III Paper - VI

तर्कशास्त्र क्या है? (What is Logic?)

'अतार्किक' व्यवहार के विरुद्ध 'तार्किक' व्यवहार, 'अतार्किक' विधि के विरुद्ध 'तार्किक' व्याख्या, 'तार्किक' मस्तिष्क आदि की चर्चा हम प्रायः करते हैं। इन सभी बातों में 'तार्किक' शब्द बहुत कुछ 'युक्तियुक्त' के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है। 'तार्किक' मस्तिष्क वाला व्यक्ति 'युक्तियुक्त' व्यक्ति है, 'युक्ति रहित' रीति ही 'अतार्किक रीति है। इन प्रयोगों की व्युत्पत्ति युक्तियों की विशेषता बताने वाले 'तार्किक' और 'अतार्किक' ~~रीति हैं~~। शब्दों के तकनीकी प्रयोग से हुई है।

"तर्कशास्त्र सत्य तर्क को असत्य तर्क से पृथक करने में प्रयुक्त होने वाले सिद्धान्तों और विधियों का अध्ययन है।"

इस परिभाषा का तात्पर्य यह नहीं है कि जिसने तर्कशास्त्र का अध्ययन किया हो, वही सत्य तर्क कर सकता है। यह कथन उतना ही त्रुटिपूर्ण होगा जितना यह दावा करना कि जिसने दौड़ने के वर्णन में प्रयुक्त भौतिक विज्ञान और शरीर-विज्ञान का अध्ययन किया हो वही अच्छी तरह दौड़ सकता है।

दूसरे, तर्कशास्त्र का एक प्राची० खंड तर्क-दोषों अथवा असत्य तर्कों की विधियों का विश्लेषण और परीक्षण है। ५

यह खंड तर्क के सामान्य सिद्धान्तों का न केवल परिवर्धित अन्तर्दर्शन ही देगा, अपितु इन त्रुटियों का

Scanned with CamScanner

का परिचय हमें निश्चय ही इनमें पड़ने से भी बचाएगा।

प्राय: "तर्कशास्त्र की परिभाषा यह दी जाती है कि यह विचार के नियमों का विज्ञान है"

किन्तु, यद्यपि यह तर्कशास्त्र के स्वभाव की एक झलक देती है तथापि यह परिभाषा पूर्णोचित नहीं है। प्रथमत: विचार उन प्रक्रियाओं में से है जिनका अध्ययन मनोवैज्ञानिक करते हैं। केवल तर्कशास्त्र ही विचार के नियमों का विज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि मनोविज्ञान भी एक ऐसा विज्ञान है जो अन्य बातों के अतिरिक्त विचार के नियमों से सम्बन्धित है और तर्कशास्त्र मनोविज्ञान की शाखा नहीं है। यह अध्ययन का एक अलग और विशिष्ट क्षेत्र है।

द्वितीयत: यदि 'विचार' का तात्पर्य जनमानस में होने वाली किसी भी प्रक्रिया से है, तो सम्पूर्ण विचार तर्कशास्त्री के अध्ययन का विषय नहीं है।

सभी तर्कणाएँ विचार हैं, किन्तु सभी विचार तर्कणाएँ नहीं हैं। कोई भी व्यक्ति बिना तर्क किए हुए एक और दस संख्याओं के बीच किसी भी संख्या के बारे में विचार कर सकता है, जैसा कि बच्चों के बुझौवल के खेल में होता है। बहुत से मानसिक क्रियाएँ अथवा विचार के प्रकार तर्क से भिन्न हैं। बिना तर्क किए हुए कोई भी व्यक्ति किसी बात का स्मरण कर सकता है, उसकी कल्पना कर सकता है या तदर्थ खेद प्रकट कर सकता है।

Scanned with CamScanner

एक अन्य परिभाषा के अनुसार तर्कशास्त्र तर्क का विज्ञान है।

यह परिभाषा दूसरी आपत्ति को दूर कर देती है. फिर भी यह पर्याप्त नहीं है। ~~तर्क~~ तर्क एक विशेष प्रकार का विचार है जिसमें अनुमान किया जाता है अथवा जिसमें आधार-वाक्यों से निष्कर्ष निकाला जाता है। किन्तु तो भी यह विचार ही है अतएव यह मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन का विषय बना रहता है। जब मनोवैज्ञानिक तर्क-प्रक्रिया का परीक्षण करते हैं तब वे इसे अत्यधिक जटिल व भावात्मक पाते हैं जिसमें कभी-कभी ऊपर से असंगत अन्तर्दृष्टियों के उन्मेष से अनुप्राणित प्रयत्न-और-भूल के बेढंगे तरीके होते हैं। ये सभी मनोविज्ञान के लिए महत्व रखते हैं। लेकिन उन अन्धाधुन्ध तरीकों से तर्कशास्त्री का कोई सम्बन्ध नहीं है जिनके द्वारा मन ~~वास्तव~~ वास्तविक तर्कप्रक्रिया में अपने निष्कर्ष पर पहुंचता है। उसका सम्बन्ध केवल सम्पूरित प्रक्रिया की सत्यता से ही है। उसका प्रश्न सदैव यह होता है - क्या अनुमानित निष्कर्ष उपयुक्त अथवा मान्य आधार-वाक्यों से ही निकलता है? यदि निष्कर्ष आधारवाक्यों से ही निकलता है, अर्थात, यदि आधार-वाक्य निष्कर्ष को ऐसा आधार अथवा समीचीन साक्ष्य प्रदान करते हैं जिससे आधार-वाक्यों के सत्य होने का कथन निष्कर्ष ~~को ऐसा~~ के भी सत्य होने का अर्थ रखता है तो तर्क सत्य होता है। इसके विपरीत तर्क असत्य होता है। सत्य और असत्य तर्क का भेद ही वह प्रधान समस्या है जिसका अध्ययन तर्कशास्त्र करता है। ~~क~~ तर्कशास्त्री के तरीके और पद्धतियाँ इसी विभेद

जो मुख्यतः स्पष्ट करने के हेतु बनाए गए हैं। केवल इसी विशेष दृष्टिकोण से ही तर्कशास्त्री सभी प्रकार के तर्कों में रुचि लेता है, चाहे उन तर्कों की विषय वस्तु जो कुछ भी हो।

आधारवाक्य और निष्कर्ष

अनुमान वह प्रक्रिया है जिसमे एक तर्कवाक्य को एक या अनेक ऐसे तर्कवाक्यों के आधार पर जाना या कहा जाता है, जिन्हे प्रक्रिया के प्रारम्भ बिन्दु के रूप में ग्रहण किया गया हो।

यद्यपि तर्कशास्त्री की अभिरुचि अनुमान की प्रक्रिया में नही होती, तो भी प्रत्येक संभव अनुमान के अनुरूप एक युक्ति होती है और ये युक्तियाँ ही तर्कशास्त्र के प्रधान विषय हैं।

युक्ति ऐसे तर्कवाक्यों का समुदाय है जिसमे एक तर्क-वाक्य के अन्य तर्क-वाक्यों से सिद्ध होने का दावा किया जाता है। ये अन्त तर्कवाक्य निष्कर्ष तर्कवाक्य की सत्यता के लिए साक्ष्य प्रदान करने वाले समझे जाते हैं। वस्तुतः 'युक्ति' पद का प्रयोग प्रायः एक प्रक्रिया के ही अर्थ में होता है किन्तु तर्कशास्त्र में इसका वह पारिभाषिक अर्थ लिया जाता है जिसे हमने अभी दिया है। युक्ति तर्क-वाक्यों का समुदाय मात्र ही नही है अपितु इसका एक ढाँचा है। युक्ति के इस ढाँचे के वर्णन में 'आधार-वाक्य' और "निष्कर्ष" पदों का प्रयोग

किया जाता है। युक्ति का "निष्कर्ष" वह तर्कवाक्य है जिसे अन्य तर्कवाक्यों के आधार पर स्वीकार किया जाता है और वे अन्य तर्कवाक्य जो निष्कर्ष की स्वीकृति के हेतु या साक्ष्य प्रदान करते हैं "आधार-वाक्य" होते हैं।

इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि "आधार-वाक्य" और "निष्कर्ष" सापेक्ष पद हैं। एक ही तर्क-वाक्य किसी युक्ति में "आधार-वाक्य" और किसी अन्य युक्ति में निष्कर्ष हो सकता है।

जो कुछ पूर्वनिश्चित है वह आवश्यक है।
प्रत्येक घटना पूर्वनिश्चित होती है।
अतः प्रत्येक घटना आवश्यक है।

यहाँ "प्रत्येक घटना आवश्यक है" निष्कर्ष है और अन्य दोनों तर्कवाक्य आधारवाक्य हैं। किन्तु युक्ति का द्वितीय आधारवाक्य "प्रत्येक घटना पूर्वनिश्चित होती है"

किसी अन्य घटना द्वारा निर्धारित घटना पूर्वनिश्चित होती है।
प्रत्येक घटना किसी अन्य द्वारा निर्धारित होती है।
अतः प्रत्येक घटना पूर्वनिश्चित होती है।

कोई तर्कवाक्य स्वतः न तो आधार-वाक्य होता है और न निष्कर्ष। वह आधार-वाक्य तभी होता है जब किसी युक्ति में आधारस्वरूप आता है और वह निष्कर्ष केवल तभी होता है जब किसी युक्ति में इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि युक्ति के आधार-वाक्यों से उसके सिद्ध होने का दावा किया जाता है। इस प्रकार "मालिक" और "नौकर" पदों के ही समान "आधारवाक्य" और "निष्कर्ष" पद सापेक्ष हैं।

Scanned with CamScanner

युक्तियों की पहचान

प्रत्येक युक्ति में एक या दो से अधिक आधारवाक्य तथा एक निष्कर्ष का ... किया जाता है। किसी विषय में अनेक कथनों का होना युक्ति को प्रकट करने की आवश्यक शर्त है किन्तु यह पर्याप्त शर्त नहीं है। तो भी वह आवश्यक शर्त युक्तियों को अयुक्तियों से अलग करती है जो अन्यथा कभी-कभी चपलता पैदा करती हैं।

यदि कला के पदार्थ अभिव्यक्त्यात्मक हैं तो वे भाषा हैं ऐसा तर्कवाक्य "सोपाधिक" (Conditional) कहलाता है। इसके अंगीभूत तर्कवाक्य "कला के पदार्थ अभिव्यक्त्यात्मक हैं" का कथन नहीं किया गया है न तो इसके दूसरे अंगीभूत तर्कवाक्य ~~द्वितीय को अपने में अन्त~~ "वे भाषा हैं" का ही कथन किया गया है। इसमें केवल कथन यह किया गया है कि प्रथम तर्कवाक्य द्वितीय को अपने में अन्तर्निहित करता है। किन्तु दोनों ही असत्य हो सकते हैं। किसी आधार-वाक्य का कथन नहीं किया गया है, कोई अनुमान नहीं किया गया है और किसी निष्कर्ष के सत्य होने का दावा नहीं किया गया है - इसमें कोई युक्ति नहीं है।

चूँकि कला के पदार्थ अभिव्यक्त्यात्मक होते हैं, वे भाषा हैं।

इसमें हमें युक्ति मिलती है। 'कला के पदार्थ अभिव्यक्त्यात्मक होते हैं' इस तर्कवाक्य का कथन आधार-वाक्य के रूप में हुआ है और 'वे भाषा हैं' इस तर्कवाक्य के आधार वाक्य से निगमित होने का दावा किया जाता है। इसीलिए इसे भी सत्य

सत्य माना जाता है। एक सोपाधिक तर्कवाक्य युक्ति जैसा दिखाई पड़ता है किन्तु यह युक्ति नहीं होता, और इन दोनों में गड़बड़ नहीं करना चाहिए।

उदाहरणार्थ, "जब से हेनरी ने मेडिकल स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है तब से उसकी सामान्य आय अधिक है।

और

जब से हेनरी ने मेडिकल स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है तब से चिकित्सा-पद्धतियों में अनेक परिवर्तन हुए हैं।

इन दोनों वाक्यों की तुलना करने से हम देखते हैं कि प्रथम वाक्य एक युक्ति है जिसमें "जब" शब्द आधार-वाक्य का निर्देश करता है पर दूसरा वाक्य युक्ति नहीं है। दूसरे वाक्य में "जब से" का तार्किक महत्व न होकर सामयिक महत्व है।

इन युक्तियों और अयुक्तियों का अन्तर उद्देश्य या रुचि पर आधृत है। दोनों की संरचना
क क्योंकि प
साँचे पर की जा सकती है।

यदि हम हमारा उद्देश्य 'क' की सत्यता का सम्पादन करना है और तदर्थ 'प' साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है तो, "क क्योंकि प" एक युक्ति है। किन्तु यदि हम क के सत्य को समस्यात्मक न मानें, और हम यह मानें कि क का सत्य उतना ही सिद्ध है जितना प का और हमारा उद्देश्य क के कारण की व्याख्या करना हो तो "क क्योंकि प" कोई युक्ति नहीं बल्कि व्याख्या है। चर्चित दोनों उदाहरणों में अन्तर

करना आसान है, प्रथम युक्ति है और द्वितीय व्याख्या। किन्तु सभी उदाहरणों का वर्गीकरण इतना सरल नहीं है। प्रत्येक सन्दर्भ लेखक या वक्ता के उद्देश्य को स्पष्ट कर सकता है। यदि उसका उद्देश्य अपने किसी तर्क-वाक्य के सत्य का संपादन हो तो वह युक्ति की संरचना करता है। यदि उसका उद्देश्य व्याख्या करना है तो वह वह व्याख्या की रचना करता है।

निगमन और आगमन

युक्तियाँ परम्परानुसार दो विभिन्न प्रकारों में विभक्त की जाती हैं, निगमनात्मक और आगमनात्मक यद्यपि प्रत्येक युक्ति यह दावा करती है कि इसके आधारवाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए साक्ष्य प्रदान करते हैं, फिर भी केवल निगमनात्मक युक्ति यह दावा करती है कि इसके आधार-वाक्य, यदि सत्य हो निश्चायक साक्ष्य प्रदान करते हैं। निगमनात्मक युक्तियों में 'उचित' और 'अनुचित' के स्थान पर पारिभाषिक पद 'वैध' और 'अवैध' का प्रयोग किया जाता है। निगमनात्मक युक्ति तब वैध होती है जब इसके आधार-वाक्य, यदि सत्य हों, निष्कर्ष के लिए निश्चायक साक्ष्य देते हों, अर्थात जब आधार वाक्य और निष्कर्ष इस प्रकार सम्बद्ध हो कि आधार वाक्यों का सत्य होना तब असम्भव हो जब तक कि निष्कर्ष भी सत्य न हो। प्रत्येक निगमनात्मक युक्ति या तो वैध होती है या अवैध।

और निगमनात्मक तर्कशास्त्र का कार्य है कि वह वैध युक्ति के आधारवाक्य तथा निष्कर्ष के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करे जिससे वैध और अवैध युक्ति को अलग किया जा सके। ~~निगमन सिद्धान्त की चर्चा इस पुस्तक के द्वितीय~~

इसके विपरीत आगमनात्मक युक्ति यह दावा नहीं करती कि इसके आधार-वाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिए निश्चायक साक्ष्य प्रदान करते हैं। आगमनात्मक युक्ति उस अर्थ में न तो वैध होती है न अवैध जिस अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग निगमनात्मक युक्तियों के बारे में होता है।

Dr Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon
V.K.S.U. Ara

Scanned with CamScanner